

युवा प्रभाग-दिव्य दर्पण ग्रुप जुलाई-08 मास के पुरुषार्थ की पोईन्ट्स

दिनांक: 23-06-08

अव्यक्तमूर्त बापदादा के सच्चे स्नेही, सदा परमात्म शक्तियों का अनुभव करते सफलता प्राप्त करने वाले, सदा सर्व सम्बन्धों से बाबा से प्रीत की रीत निभाने वाले निमित्त दैवी टीचर बहनों वा भाईयों और दिव्य दर्पण के सर्व सदस्यों प्रति,

युवा प्रभाग की ओर से दादी रतन मोहिनी जी एवं बी.के.चन्द्रिकाबहन की मधुर याद स्वीकार करना जी।

आपको बताते हुए अति हर्ष हो रहा है कि दिव्य दर्पण ग्रुप के सदस्यों की ओर से बड़े उमंग उत्साह भरे समाचार प्राप्त हो रहे हैं। आज दिन तक 3026 जितने भाई-बहनों ने अपना नाम दर्ज कराया है और चार्ट भर रहे हैं। अभी प्रोजेक्ट के प्रथम 6 मास पूरे हुए हैं और बहुत सुन्दर अनुभव प्राप्त हो रहे हैं।

शायद आप सबको संकल्प चल रहे होंगे कि अभी दिव्य दर्पण प्रोजेक्ट के 6 मास पूरे हुए हैं इसलिए अब चार्ट नहीं भरने होंगे और प्रोजेक्ट समाप्त हो गया। ठीक है ना! परन्तु “जब तक दिव्य दर्पण नहीं बने है तब तक चार्ट भरना ही है” यह दिव्य दर्पण ग्रुप वालों का स्लोगन है। यह विशेष ग्रुप संख्या बढ़ाने के लिए नहीं लेकिन बापदादा की आशा अनुसार दिव्य दर्पण बनकर गवर्नमेन्ट के सामने ग्रुप ले जाने के लिए बना है। अतः जिन भाई-बहनों के अब तक नियमित रूप से पोस्टकार्ड प्राप्त हुए हैं उन्हीं को अब sms भेजे जायेंगे और दिव्य दर्पण ग्रुप के सदस्य माने जायेंगे।

आप सभी जानते हैं कि यज्ञ में यह वर्ष “परमात्मा शक्ति अनुभूति” वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है तो दूसरे 6 मास के पुरुषार्थ की रूपरेखा निम्नलिखित रूप से रहेगी।

प्रोजेक्ट के दुसरे 6 मास की रूपरेखा:

- ✓ जुलाई और अगस्त - बाबा से सर्व सम्बन्धों द्वारा अव्यभिचारी याद, लक्ष्य - क्रोध मुक्त।
- ✓ सितम्बर और अक्टूबर - जीवन की छोटी-छोटी बातों में परमात्म शक्तियों की अनुभूति, लक्ष्य - सम्पूर्ण अनासक्त।
- ✓ नवम्बर और दिसम्बर - मन्सा श्रेष्ठ स्थिति के द्वारा विश्व कल्याण की सेवा (योग के प्रयोग), लक्ष्य - सम्पूर्ण निर्विकारी।

जुलाई मास का चार्ट:

इस मास में हम विशेष बाबा से सर्व सम्बन्धों द्वारा अव्यभिचारी याद का अनुभव करेंगे और सम्पूर्ण क्रोध मुक्त बनने का लक्ष्य रखेंगे।

विधि:

इस मास में चार साप्ताह के लिए चार सम्बन्धों का अनुभव करेंगे और क्रोध के चार स्वरूपों से मुक्त बनेंगे जो निम्नलिखित होगा:

साप्ताह	सम्बन्ध	गुण	स्लोगन	धारणा	क्रोध मुक्त
प्रथम	बाप	फरमानबरदार	सपूत बन सबुत देना है।	रोज रात को रीपोर्टिंग करना	डांटना मुक्त
दुसरा	टीचर	ईमानदार	जब तक जीना है तब तक पढ़ना है।	मुरली की कोई एक पोईन्ट पर विचार सागर मंथन करना	आवेश मुक्त
तिसरा	गुरु	आज्ञाकारी	हुकमी हुकम चला रहा है।	श्रीमत का पालन किस विधि से किया	टक्कर मुक्त
चौथा	साजन	वफादार	तुम्हीं से बैटुं, तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से श्वासों श्वास साथ रहूँ।	बाबा को प्रेम पत्र लिखना	नाराज़गी मुक्त

❖ फ्रेमबुक में ऊपर की चार पंक्तियों में निम्नलिखित बिन्दु लिखकर उसका परिणाम प्रतिदिन रात को सोने से पहले जरूर लिखें:

- | | | |
|-----------------------|------------------------------|------------------------|
| 1. गुड मोर्निंग - | 2. अमृतवेला - | 3. व्यायाम/पैदल - |
| 4. ट्राफिक कन्ट्रोल - | 5. मुरली क्लास - | 6. अव्यक्त मुरली पढ़ी? |
| 7. स्वमान की स्मृति- | 8. बाबा से संबंध की अनुभूति- | 9. नुमा शाम का योग - |
| 10. क्रोध मुक्त रहे - | 11. गुड़ नाईट - | |

- बाबा से सम्बन्ध की अनुभूति – अगर बाबा से सर्व सम्बन्ध की अनुभूति नहीं की तो जिस सम्बन्ध की अनुभूति नहीं की होगी वह सम्बन्ध पुराने संसार में जरूर खिंचेगा। यह सुख सारे कल्प में केवल संगमयुग में ही प्राप्त होता है। अनुभूति कैसी रही वह लिखना है- साधारण, विशेष, अति समीप।
- क्रोध मुक्त रहे – अगर हाँ तो ✓ निशान लगाना है और अगर ना तो ✗ निशान लगाना है और लिखना है कि कौन-सा संस्कार इमर्ज हुआ जैसे कि- नाराज़गी।

❖ इस बार जो स्वमान लिखते थे उसमें परिवर्तन कर रहे हैं। स्वमान के बदले ऊपर जो धारणा की पोईन्ट लिखी है वह फ्रेम बुक में आज की मुरली के पश्चात् इस प्रकार लिखना है:

1. रोज रात को रीपोर्टिंग करना: सारे दिन में जो व्यवहार किया हो किसी को दुख दिया हो, कोई भूल हुई हो, कोई सुख की बात हुई हो, खुशी के समाचार आये हो आदि-आदि।
2. मुरली की कोई एक पोईन्ट पर विचार सागर मंथन करना: मुरली में से कोई एक पोईन्ट लेकर उस पर कम से कम 10 लाईन लिखना है।
3. श्रीमत का पालन किस विधि से किया: मुरली में आज विशेष बाबा ने कौन-सी श्रीमत दी है और मैंने किस विधि से उसे कर्म में रखा और मेरा अनुभव क्या रहा वह लिखना है।
4. बाबा को प्रेम पत्र लिखना: रोज रात को रूहानी प्यार से भरपूर, भावनाओं से भरा हुआ प्रेम पत्र लिखना है।

❖ सम्पूर्ण क्रोध मुक्त बनना:

सम्पूर्ण क्रोध मुक्त बनने के लिए बहुत सुक्ष्म रूप से स्वयं को चेक करना है जैसे कि नाराज़गी क्यों आती है, कब आती है, कैसे आती है और उसे दूर करने के लिए बाबा के महावाक्य क्या है और मुझे किस प्रकार से उसे धारण करना है। उस पर विजयी बनने के लिए मैं क्या करूंगा/करूंगी। एक सप्ताह के लिए लगातार उस कमजोरी के पीछे मेहनत करके उसे भगाना ही है। उस के लिए विशेष बाबा से शक्ति लेनी है।

स्वमान:

बाप के सम्बन्ध में:

1. मैं आत्मा मास्टर शान्ति का सागर हूँ।
2. मैं आत्मा मास्टर प्यार का सागर हूँ।
3. मैं आत्मा ज्ञान सागर की सन्तान हूँ।
4. मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तित्वान हूँ।
5. मैं आत्मा बाबा का सिकिलधा बच्चा हूँ।
6. मैं आत्मा आनन्द का सागर हूँ।
7. मैं आत्मा परम पवित्र पिता की पावन सन्तान हूँ।

टीचर के सम्बन्ध में:

8. मैं आत्मा भगवान का विशेष लाडला स्टूडेंट हूँ।
9. मैं आत्मा मास्टर त्रिकालदर्शी हूँ।
10. मैं आत्मा त्रिनेत्री हूँ।
11. मैं आत्मा भगवान का रेग्युलर पंच्युअल स्टूडेंट हूँ।
12. स्वयं भगवान परमधाम से आकर मुझे पढ़ाते हैं।
13. मुझ आत्मा को भगवान – भगवान भगवती बना रहे हैं।
14. मैं पास विथ ऑनर आत्मा हूँ।

गुरु के सम्बन्ध में:

15. मैं आत्मा मास्टर वरदाता हूँ।
16. मैं आत्मा मास्टर विधाता हूँ।
17. मैं आत्मा मास्टर गति-सद्गति दाता हूँ।
18. मैं आत्मा मास्टर मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता हूँ।
19. मैं आत्मा मास्टर भाग्यविधाता हूँ।
20. मैं आत्मा बेहद का वैरागी हूँ।
21. मैं आत्मा राजर्षि हूँ।

साजन के सम्बन्ध में:

22. मैं आत्मा कम्बार्इन्ड हूँ।
23. मैं आत्मा सदा सुहागिन हूँ।
24. खुदा दोस्त मेरा साथी हूँ।
25. मेरा साथी स्वयं सर्वशक्तित्वान परमात्मा है।
26. बाबा का हाथ और साथ सदा मेरे साथ है।
27. मैं आत्मा बिन्दी और कंगनधारी हूँ।
28. मैं आत्मा गोपिका हूँ।
29. मैं आत्मा शिवसाजन की बंसी हूँ।
30. मैं आत्मा वफादार-फरमानबरदार हूँ।
31. मैं आत्मा एकनामी हूँ।

प्रेमबुक का सेम्पल पेज

महादेवनगर, 01-07-08

स्वमान: मैं आत्मा मास्टर शान्ति का सागर हूँ।

गुड मोर्निंग- 3.30 AM

ट्राफिक कंट्रोल-5

स्वमान की स्मृति-बहुत अच्छी

क्रोध मुक्त: हां

अमृतवेला- हॉल में, 3.45 से 4.45AM

मुरली क्लास- क्लास में सुनी

बाबा के साथ सम्बन्ध की अनुभूति: अति समीप

गुड़ नाईट- 10.30 PM

व्यायाम/पैदल - ✓

अव्यक्त मुरली पढ़ी? हां

नुमा शाम का योग-✓

आज की मुरली:

भारत को आबाद करने में अपना तन-मन-धन सब सफल करना है। बहुत-बहुत मीठे बन सेवा करनी है। सचखण्ड स्थापन करने के लिए सच्चा बनना है। विजय माला में पिरोने लिए याद की रेस करनी है। चलते-फिरते कार्य करते बाप-टीचर-गुरू को याद करना है।

वरदान: न्यारे और प्यारे पन की विशेषता द्वारा बाप के प्रिय बनने वाले निरन्तर योगी भव:

स्लोगन: जो अपने नाम-मान और शान का त्याग कर बेहद सेवा में रहते हैं वही परोपकारी हैं।

रीपोर्टिंग:

आज मुझ आत्मा ने एक भाई को थोड़ा जोर से बोल दिया जो मुझे नहीं करना चाहिए था। ज्ञान के हिसाब से मेरे संकल्प ठीक नहीं चले। मैं हिममत्तहीन हो गई थी। आज दादी का क्लास पढ़ा जिससे यह पक्का किया कि मुझे सच्चाई सफाई पर ध्यान देना है।